

ZÚME जुमे सत्र 5 का वीडियो स्क्रिप्ट्स

मेल कराने वाले मनुष्य

वापस स्वागत है जुमे ट्रेनिंग पर

एक कल्याणकारी व्यक्ति तेजी से मदद कर सकता है शिष्य बनाने में ऐसी जगह भी जहां यीशु के अनुयायी बहुत ही कम या एक्का दुक्का हों.

जब यीशु ने अपने चेलों को नये क्षेत्रों में भेजा शिष्य बनाने के लिये, उन्होंने उन्हें एक सरल और बहुत ही महत्वपूर्ण आज्ञा दी.

यीशु ने कहा - इसलिये न बटुआ, न झोली, न जूते लो, और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो. जिस किसी घर में जाओ पहले कहो - इस घर पर कल्याण हो यदि वहां कोई कल्याण के योग्य होगा तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा न ही तो तुम्हारे पास लौट आयेगा. उसी घर में रहो और जो कुछ उनसे मिले वही खाओ पीओ। क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिये। घर घर न फिरना.

पर इस सबका क्या मतलब है ?

जब हम शिष्य बनाने की सोचते हैं. हमारा पहला विचार शायद हो. बेहतर होगा हम अपनी आर्थिक स्थिति सही कर लें . एक जाहिर लक्ष्य को चुनें, और एक स्पष्ट कार्यप्रक्रिया रखें। यदि यीशु ने कहा - जाओ, तो बेहतर है आप जायें और चलते रहें. सबको बताएं ! सब जगह ! सारा समय.

पर यीशु अपने निर्देश देते समय लगता था कम ही चिंता करते हैं रूपयें पैसे की और उत्साह की. और उन्हें कहीं ज्यादा ख्याल था केंद्रित होने का.

यीशु चाहते थे कि उनके चेले ढूँढ़ें और निवेश करें एक कल्याणकारी व्यक्ति में.

यदि आप ऐसे स्थान पर शिष्य बनाना चाहें जहां ज्यादा या कोई भी ना हो. फिर एक कल्याणकारी व्यक्ति की तलाश आपके लिये सबसे महत्वपूर्ण बात होगी.

एक कल्याणकारी व्यक्ति वो है.

जो आपकी कहानी, परमेश्वर की कहानी और यीशु का सुसमाचार सुनने का इच्छुक हो.

कोई जो अतिथि सत्कार करने वाला हो, और आपका अपने घर में स्वागत करे या अपने कार्यस्थल पर या अपने परिवार और मित्रों के साथ आपके समारोह में शामिल हो.

कोई जो अन्य लोगों को जानता हो. (या दूसरों में प्रसिद्ध हो) और जो उत्साहित हो एक छोटे से समूह को या भीड़ को भी इकट्ठा करने में.

कोई जो वफादार है उसे साझा करने में अन्य लोगों के साथ जो भी वो सिखता है. आपके जाने के बाद भी.

बाइबल में हम पाते हैं कि यीशु और उसके चेले कल्याणकारी व्यक्तियों से मिलते हैं जो थोड़े अपेक्षारहित हैं. गन्नेसरत के क्षेत्र में यीशु मिलते हैं दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति से जो अकेला रहता था और जंजीरों में बंधा था. हम कभी भी उसके बारे में कल्याणकारी व्यक्ति के रूप में सोच भी नहीं सकते. पर वो यीशु को सुनने के प्रति उत्सुक था. वो उसने अतिथि सत्कार किया और यीशु को जहां वो रहता था स्वागत सहित बुलाया. वो मशहूर था और वो आसानी से भीड़ को खींच सकता था. चाहे वो अपने उपद्रवी व्यवहार के कारण ही. और यीशु ने पाया कि वो वफादार है और उसने वो सब साझा किया जो मायने यीशु उसके लिये रखते थे अपने परिवार के साथ, अपने समुदाय के साथ, और अपने पूरी जाति के साथ. असल में जब यीशु उस क्षेत्र में वापस लौटे, एक बड़ी भीड़ जमा हो गई, और वो बहुत उत्साहित थे उस व्यक्ति को देखने को जिसके बारे में उन्होंने इतना सुना था।

सामरिया में यीशु कुएं पर एक स्त्री से मिले. वो यीशु के प्रति उत्सुक थी और राजी थी अतिथि सत्कार के लिये और पानी पीने के उनके अनुरोध को पूरा करने के लिये. हम पाते हैं कि उसके पांच पति थे और वो अभी भी एक किसी और मनुष्य के साथ रह रही थी. तो एक छोटे से शहर में यकीनन दूसरे लोग उसे जरूर जानते. और उसके साथ यीशु के वार्तालाप के बाद, वो वफादार रही और उसने साझा किया इतना ज्यादा और इतना जल्दी कि पूरा शहर ने यीशु से कहा कि उनके पास रहे और उनके साथ भी साझा करें. और उन्होंने ऐसा किया.

इसलिये यदि एक कल्याणकारी व्यक्ति कहीं भी रह सकता है, कुछ भी कर सकता है. और शायद वो कोई भी हो सकता है जिसे हम जानते हों या हम मिलें. हम उसे कैसे ढूँढ़ें ?

यहां तीन सरल तरीकें हैं.

हम समाज के लोगों से उसकी सिफारिश मांगें . यहां भरोसे के लायक कौन है ? क्या इस जगह ऐसा कोई है जो अपने से पहले दूसरों के बारे में सोचता है ? यदि हम एक ही नाम बार बार सुनें, तो हम उन्हें मिलने की कोशिश करें, उनके साथ आत्मिक विचार साझा करें. और देखें कि क्या वो सुनने और साझा करने को उत्सुक है.

हम स्वयं को पेश कर सकते हैं किसी के लिये प्रार्थना करने के लिये. तब जब हम प्रार्थना के चलन में हो. या काम के स्थान पर या किसी खेल के समय. जहां कहीं भी अवसर हो और फिर उस प्रार्थना को बदल दें एक आत्मिक वार्तालाप में.

हम आत्मिक विचारों को प्रस्तुत करें हर वार्तालाप में ये देखने के लिये कि क्या परमेश्वर किसी व्यक्ति के जीवन में कार्य कर रहे हैं. यदि वो उत्सुक है और इच्छुक है फिर हम उनसे पूछें कि क्या वो राजी होंगे एक समूह को इकट्ठा करने के लिये ताकि और विचार विमर्श किया जा सके.

सिफारिशें मांगें. प्रार्थना का प्रस्ताव रखें. आत्मिक विचारों का समावेश करें. ये सब वो तरीकें हैं जिन्हें आप आरंभ कर सकते हैं कल्याणकारी व्यक्ति ढूंढने के लिये.

चाहें हम कैसे भी ढूंढें । याद रखें यीशु ने कहा - कल्याणकारी व्यक्ति वो व्यक्ति है जिसके साथ हमें ज्यादा से ज्यादा अपना शिष्य बनाने का समय बिताना चाहिये.

आसानी से ये सोचा जा सकता है कि हमारे लिये अपने समय का वाजिब इस्तेमाल सबसे ज्यादा ये है कि हर एक को अपना स्वयं बराबर अर्पित करें. पर यीशु ने कहा और दिखाया कि वो नहीं चाहते कि हम सबके साथ उथले रूप में रहे पर कुछ को गहराई से दें.

यीशु अक्सर भीड़ को आकर्षित करते थे. पर बाईबल हमें बार बार बताती है - यीशु उस भीड़ से अलग हट जाते अपना ज्यादातर समय अपने बारह सबसे करीबी अनुवायियों के साथ बिताने के लिये. बहुत बार ऐसा होता जहां यीशु अपना ज्यादा समय निवेश करते उससे भी छोटे तीन के समूह के साथ.

यीशु जिनके पास कहीं ज्यादा सामर्थ्य, कहीं ज्यादा ऊर्जा, कहीं ज्यादा अधिकार, अनुशासन, बुद्धिमत्ता, ज्ञान, समझ और करुणा थी, उन्होंने चुना कि अपना समय बस कुछ के साथ ही गहराई से निवेश करें. और उन्होंने अपने शिष्यों को ऐसा ही करने को कहा. क्या इससे तुक नहीं बनता कि हम उनका अनुसरण करें और उनकी इस विशुद्ध शैली को साझा करें ?

कल्याणकारी व्यक्ति.

उनका मिलना आसान नहीं. शायद हजारों में एक हो. पर एक छुपे हुये खजाने की तरह जिसकी तलाश वाजिब है. उनका मूल्य परमेश्वर के परिवार को बढ़ाने के लिये मांफा नहीं जा सकता.